मेघदूत

कालिदास

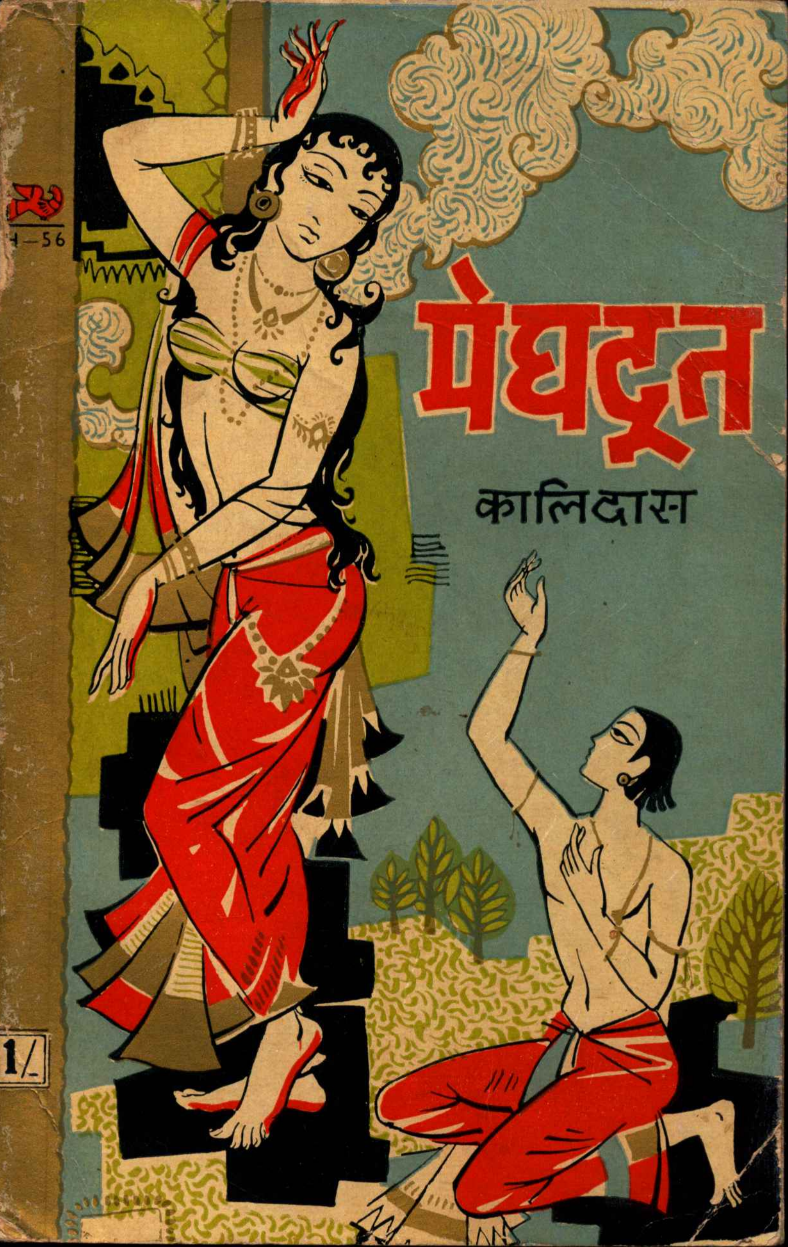

461 HIND-SERIES-HINDI
RE. 1·00 62

महाकवि कालिदास का भारतीय साहित्य में वही स्थान है जो अंग्रेज़ी साहित्य में शेक्सपियर का है। और मेघदूत कालिदास की सबसे अधिक लोकप्रिय काव्य-रचना है।

'मेघदूत' में अपनी प्रियतमा से बिछुड़े हुए पति के हृदय का ऐसा दर्द-भरा चित्रण कालिदास ने किया है कि इसकी एक-एक पंक्ति पाठक को रस-विभोर कर देती है।

'मेघदूत' समूचे संस्कृत काव्य-साहित्य में बेजोड़ कृति मानी जाती है। विश्व की अनेक प्रमुख भाषाओं में इसका अनुवाद हो चुका है।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली-३२

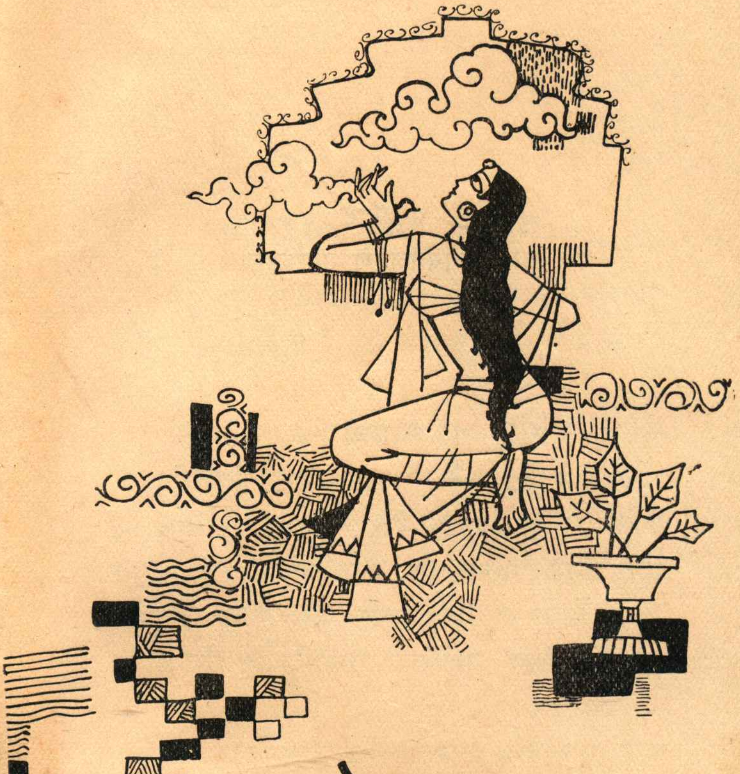

मेघदूत

कालिदास

अनुवादक

डा० भगवतशरण उपाध्याय

मूल्य : एक रुपया

प्रकाशक : हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड
जी० टी० रोड, शाहदरा, दिल्ली
मुद्रक : शिक्षा भारती प्रेस, शाहदरा, दिल्ली

MEGHDOOT : KALIDAS : POETRY

कालिदास और 'मेघदूत'

महाकवि कालिदास हमारे देश के उन यशस्वी साहित्यकारों में से हैं, जो सदा-सदा के लिए अमर हो गए हैं।

उनका यश इस विशाल देश की सीमाओं को लांघकर सारे सभ्य संसार में फैल चुका है। उन्हें हुए लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष हो चुके हैं पर उनके काव्य और नाटक आज भी अपना सानी नहीं रखते ; बल्कि यह कहना अधिक संगत होगा कि उनकी लोकप्रियता दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है।

इस महान कवि के जन्मस्थान, जन्मतिथि, यहां तक कि नाम और रचनाओं के बारे में भी विद्वानों में गहरा मतभेद है। विद्वानों ने उन्हें बंगाल, उड़ीसा से लेकर मध्यभारत और कश्मीर तक का निवासी माना है।

उनके जन्म के सम्बन्ध में ईसापूर्व दूसरी

शताब्दी से लेकर ईस्वी सन् छठी शताब्दी तक विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत हैं।

परन्तु अधिकतर विद्वान् महाकवि की जन्मभूमि कश्मीर को मानते हैं और काल ईस्वी सन् ३६५ से ४४५ के बीच।

एक बात तो बिलकुल स्पष्ट है कि कालिदास देश-भर में खूब घूमे थे। यही कारण है कि उन्होंने अपनी रचनाओं में जिन-जिन स्थानों का वर्णन किया है, वह पूरी सच्चाई लिए हुए है।

महाकवि ने अपने जीवन के सम्बन्ध में भी कहीं कुछ नहीं लिखा है। उनकी रचनाओं से इतना स्पष्ट मालूम हो ही जाता है कि उनका ज्ञान, अनुभव और कल्पना का क्षेत्र बहुत विशाल था।

वैसे तो कालिदास नाम से कोई चालीस के लगभग ग्रन्थ मिलते हैं, परन्तु महाकवि कालिदास की प्रामाणिक रचनाएं केवल सात ही मानी जाती हैं: तीन नाटक और चार काव्य। नाटकों के नाम हैं—(१) मालविकाग्निमित्र, (२) विक्रमोर्वशीय, (३) अभिज्ञानशाकुन्तलम्; और काव्यों के—(१) ऋतुसंहार, (२) मेघदूत, (३) रघुवंश,

(४) कुमारसम्भव ।

काव्यों में 'मेघदूत' यद्यपि सबसे छोटा है तो भी काव्य-रसिकों ने इसे ही सबसे अधिक सराहा है ।

'मेघदूत' का नायक राजा कुबेर का अनुचर है । एक दिन, प्रिया में अधिक अनुराग होने के कारण, उससे स्वामी के कार्य में ढिलाई हो गई । इसपर कुबेर ने उसे अलका नगरी से साल-भर के लिए निकाल दिया ।

तब वह अपनी पत्नी को अलका में छोड़कर रामगिरि पर्वत पर प्रवास के दिन बिताने लगा ।

जैसे-तैसे प्रिया से बिछुड़े उसने कुछ महीने तो काट लिए, किन्तु जब वर्षाऋतु प्रारंभ हुई और काले-कजरारे बादल आकाश में उमड़ने-घुमड़ने लगे, तो उससे और नहीं रहा गया, अधिक नहीं सहा गया ।

अलका की ओर उड़ते बादलों को देखकर उसने सोचा—क्यों न बादल को ही मित्र बनाकर विरह में दुःखी प्रिया को अपना सन्देश भेज दूं !

तब उसने कुटज के ताज़े फूल अंजलि भरकर मेघ को समर्पित किए और अपना सन्देश कहा ।

वह रामगिरि से लेकर अलका तक का मार्ग मेघ को बड़ी मार्मिकता के साथ बताता है। इतनी ही कथा इस काव्य में है।

'मेघदूत' की सभी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। हमारे देश में तो सदियों तक 'मेघदूत' के ढंग पर काव्य-रचना होती रही ; विदेशी साहित्यकारों की कृतियों पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। पर 'मेघदूत' अपना-सा आप ही है। उसकी ऊंचाई को कोई नहीं छू सका।

'मेघदूत' वियोग-शृंगार की ऐसी रस-भरी कविता है, जो पाठक को अपने में डुबो लेती है।

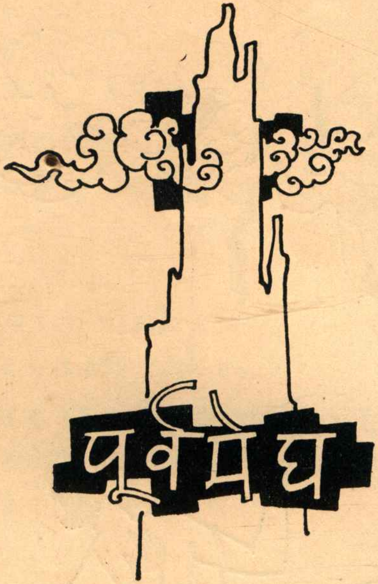
पूर्वमेघ

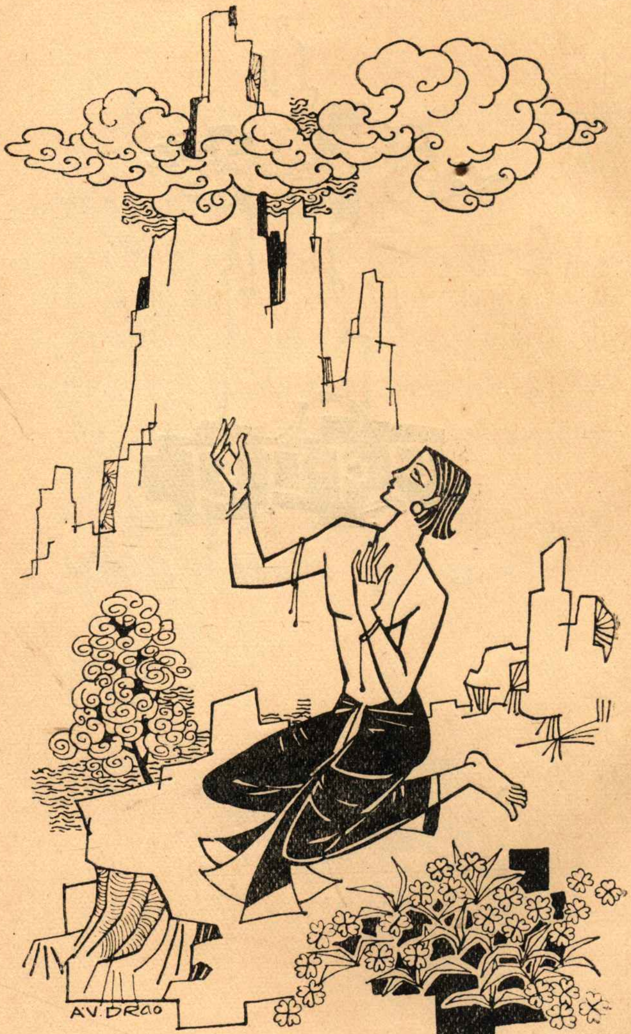
A.V. DRAO

एक यक्ष जब एक दिन
अपने कर्तव्य में चूक गया,
तब उसके स्वामी यक्षराज कुबेर ने
उसे अपनी पत्नी से
साल-भर दूर रहने का शाप दे दिया।
उस शाप से घटी महिमावाले यक्ष ने
तब बनवास के समय सीता के स्नान से पवित्र जलकुंडों
और घनी छायावाले पेड़ों से भरे
रामगिरि के आश्रम में डेरा डाला।

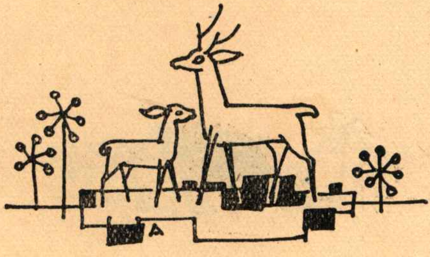

अबला पत्नी के वियोग में दुबले हो गए,
स्वर्णकंगन के सरक जाने से सूनी कलाईवाले,
उस कामी यक्ष ने जैसे-तैसे करके
कुछ मास तो उस पर्वत पर काट लिए ;
पर जब आषाढ़ का पहला दिन आया
तब उसने टीले से खेल में टकराते हाथी की तरह
अपने पहाड़ की चोटी पर झुके-मंडराते मेघ को देखा ।
फिर तो उसका धीरज टूट गया ।

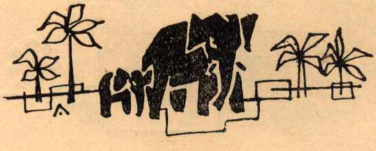

काम का संचार करनेवाले मेघ के सामने
बड़ी कठिनाई से
उमड़ते आंसुओं को रोके
कुबेर का वह अनुचर देर तक सोचता रहा।
अरे जब प्रिया के सहवास से
सुखी जनों का मन
मेघ को देखकर जाने कैसा, अनमना हो जाता है,
तो फिर गलबहियां डालने के लिए आतुर
उन विरहियों के क्या कहने,
जो अपनी प्रियाओं से दूर हों !

सावन के समीप आने पर
प्रिया के प्राणों को सहारा देने के उद्देश्य से
उसने मेघ द्वारा ही
कुशल-संदेसा भेजना चाहा।
टटके कुटज के फूलों से अंजली भर
गद्‌गद यक्ष ने
मधुर वचनों से उसका स्वागत किया।

कहां तो धुएं, धूप, जल और हवा से बना निर्जीव बादल
और कहां जीवन्त चतुर दूतों से पठाया जानेवाला
वह हिया का संदेसा !
पर काम के मारे दीनों ने
चेतन-अचेतन का भेद कब किया !
वे तो दोनों के सामने
स्वाभाविक ही दीन बन जाते हैं।
सो उस यक्ष ने भी
जीव और जड़ का भेद भुला
मेघ से ही याचना की—

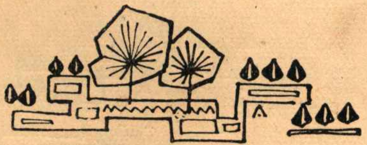

जानता हूं कि तुम मेघों के भुवनविख्यात कुल
पुष्कर और आवर्तक में जन्मे हो।
इन्द्र के मनचाहा रूप धारण करनेवाले प्रधान कर्मचारी हो,
सो भी जानता हूं।
इसीसे दुर्भाग्य का मारा,
प्रिया से बिछुड़ा,
मैं तुम्हारे पास याचक बनकर आया भी हूं;
क्योंकि व्यर्थ भी हो जाए
तो गुणियों से याचना उत्तम होती है,
सफल भी हो जाए
तो नीचों से याचना बुरी होती है।

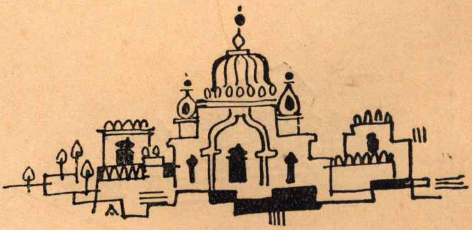

संतप्तों के शरण हो तुम, मेघ,
जले हुओं के आश्रय ।
इससे धनपति कुबेर के क्रोध के कारण
प्रिया से बिछुड़े
मुझ अभागे का संदेश
उस प्रिया के पास तुम्हीं ले जाओ ।
तुम्हें अलका जाना होगा,
यक्षों की उस प्रसिद्ध पुरी को,
जहां के भवनों को
उसके बाहरी बगीचों में बैठे
शिव के ललाट की चांदनी धवल धोती रहती है ।

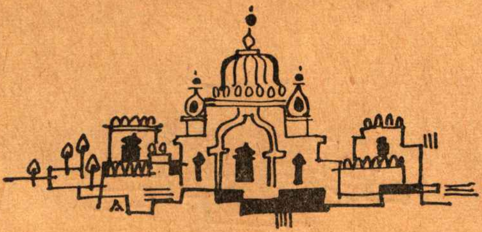

श्राकाश के मार्ग से जाते,
पवनपथ पर श्रारूढ़,
तुम्हें प्रवास से लौटते पतियों की ललनाएं,
दीर्घकाल से बिछुड़ी प्रोषितपतिकाएं,
श्रपनी श्रलकों को,
घुंघराले कुंतलों के रूखे छोरों को
उठाए हुए निहारेंगी,
श्राश्वस्त होंगी कि परदेशी सजन लौटेंगे।
तुम्हारे घुमड़ने पर कौन श्रभागा
बिरहा की मारी प्रिया की उपेक्षा कर सकता है,
जब तक कि वह मेरी तरह ही
दैव का मारा परबस न हो !

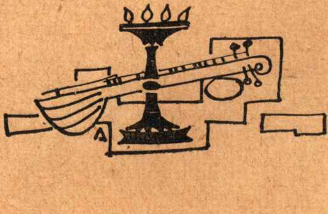

देखो, अनुकूल वायु
तुम्हें मन्थरगति से उड़ाए लिए जा रही है।
तुम्हारे बायें उधर वह गर्वीला,
आन का पक्का पपीहा
स्वातिजल-मात्र का याचक चातक,
मधुर टेर रहा है।
और आगे गर्भाधान के उत्सव में दक्ष
बगुलियों की पांत
नयनों को सुख देनेवाले तुम्हारे साथ-साथ उड़ चलेंगी।

चलते चले जाना, मेघ, अविराम गति से,
बिना रुके, बगैर दम लिए,
और अवश्य देखना
मेरी उस एकमात्र पत्नी, अपनी भावज को
जो मेरी बाट जोहती
विरह के बचे दिन गिनने में लगी होगी,
इस आशा से कि लौटूंगा ।
जानो कि नारी का हृदय
कुसुम-सा कोमल होता है,
पर विरह में झट टूटकर इसी कारण गिर नहीं पड़ता
कि संयोग की आशा उसे रोके रहती है,
फूल की ही तरह,
जिसे नीचे का जाला रोक लेता है,
टूटकर उसे बिखर जाने नहीं देता ।

कानों को सुख देनेवाले तुम्हारे मधुर गर्जन के प्रताप से
धरा खुंभियों को जनती है, मातृत्व पाती है।
उसी गर्जन को
जब मानसरोवर जाने को उत्सुक राजहंस सुनेंगे
तब वे कमलदंड का कलेवा ले
सहसा आकाश में उड़ पड़ेंगे,
कैलास तक तुम्हारे साथी बने रहेंगे,
राह सूनी न रह पाएगी।

अब अपने प्रिय सखा इस गिरिशिखर से
गले मिल विदा ले लो
जिसकी भूमि पर
लोगों के पूज्य रघुपतिचरणों के चिह्न
उभरे पड़े हैं,
और जो समय-समय से
तुम्हारा संयोग होने पर चिरविरह के तत्ते आंसू डाल,
तपी भाफ छोड़,
अपना स्नेह प्रकट करता है।

अब अपनी राह समझ लो,
अपनी यात्रा का अनुकूल मार्ग मुझसे सुन लो—
वह मार्ग जिसमें पर्वत होंगे,
जिनकी चोटियों पर थक-थककर पांव रखते तुम चलोगे,
जिसमें फूटते सोतों की धाराएं होंगी,
जिनका हलका जल, स्वयं छीज-छीजकर,
तुम पीते जाओगे ।
और तब, हे जलद, वह मार्ग समझ लेने के बाद,
मेरा वह संदेश सुन लेना
जो कानों से पी लेने योग्य है ।

सिद्धों की भोली ललनाएं
चकित हो-होकर,
सिर उठा-उठाकर, तुम्हारा उत्साह देखेंगी,
आशंका से पूछेंगी—
यह क्या पवन पर्वत उड़ाए लिए जा रहा है ?
यहां जो ये बेंत के सरस पौधे हैं
इनके ऊपर से उठकर
उत्तर की ओर, गगनपथ के दिग्गजों को बगली देते,
उनकी मोटी-भोंडी सूंडों की चोटों से
बचते हुए उड़े चलो।

वह देखो ! सामने बांबी के पीछे से
जड़े रत्नों की झिलमिल ज्योति-सा जो निकला आ रहा है
वह इंद्रधनुष का खंड है ।
उससे तुम्हारा यह श्याम तन
और भी कमनीय हो उठेगा,
रंगबिरंगा सुंदर,
जैसे झिलमिलाते मोरपंख से गोपालकृष्ण का शरीर हो ।

खेती का फल तुम्हारे ही अधीन है,
ऐसा जानकर गांवों की बहुएं,
भौंहों के खेल में कोरे,
पर प्यार से भीगे अपने लोचनों से तुम्हें पी लेंगी।
वहां तनिक बिरम जाना,
उस भाल की ऊंची भूमि पर,
फिर उसके खेतों पर बरस पड़ना,
जिससे हाल के जुते खेतों से उठी गंध
हवा को महमह कर दे।
इस प्रकार कृषिफल का कारण होने का प्रमाण
नारियों को देते, कुछ हलके होकर,
झट उत्तर की ओर उड़ चलना।

आगे आम्रकूट पर्वत मिलेगा, अमरकंटक,
जो दावानल को धारासार बरसकर बुझानेवाले, यात्रा से थके,
तुम्हारे जैसे परोपकारी मित्र को
सिर-आंखों पर लेगा।
अरे, अधम तक तो आश्रय के लिए आए मित्र से,
किए उपकार को याद कर,
विमुख नहीं होते,
फिर जो श्रेष्ठ हैं उनकी तो बात ही क्या !
वे भला मुंह क्यों चुराने लगे ?

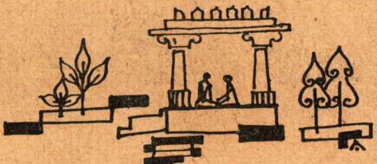

वह आम्रकूट पर्वत
वन के पके पीले आमों से ढका दमक रहा होगा।
उसके मस्तक पर
जब तुम तेल से चिकनी वेणी की तरह उतर बैठोगे,
तब वह देवदंपतियों की दृष्टि में ऐसा लगेगा
जैसे पृथ्वी का उभरा हुआ स्तन हो,
बीच में श्याम चूचुक, और सब ओर से पीला।

क्षण-भर वहां फिर बिरम लेना, उन कुंजों में,
जहां वनचरों की बहुओं ने रमण किया है,
और तब स्वयं बरसकर,
तनिक हलके हो,
पहले से तेज़ चलकर राह तय कर लेना।
आगे तुम्हें नर्मदा दिखाई देगी,
विंध्याचल के चरणों में,
सतपुड़ा की ढलान पर, असम शिलाओं में बिखरी,
जैसे हाथी के तन पर
विविध रेखाओं द्वारा उसका सिंगार कर दिया गया हो।

बरस चुकने के बाद
तुम जंगली हाथियों के तीखे मद से बसे
ग्रौर जामुनों की झुरमुटों से
रुक-रुककर बहनेवाली नर्मदा के जल को पीकर ग्रागे चलना ।
तब भीतर से ठोस हो जाने के कारण
वायु तुम्हें खेल में इधर-उधर उड़ा न सकेगी,
क्योंकि रीते-छूंछे सभी हलके होते हैं,
ग्रौर भरेपूरे भारी जन गौरव के ग्रधिकारी होते हैं ।

जलद, तुम्हारे मार्ग को
विविध जीव भिन्न-भिन्न प्रकार से सूचित करेंगे।
कहीं अधखिले केसरोंवाले हरे-पीले कदंबों को
भौंरे हेरते होंगे,
कहीं मृग कछारों में
कदली की पहली फूटती कलियों को खोज रहे होंगे,
कहीं हाथी तुम्हारी फुहार के स्पर्श से
वन की भूमि से उठती गंध को सूंघते होंगे।

सखे, सही, मेरी प्रिया की ग्रोर
तुम बड़ी तेज़ी से जाने की इच्छा करोगे
फिर भी कुटज के फूलों की गंध से महकते पर्वत-पर्वत पर,
मुझे लगता है, तुम ग्रटक जाग्रोगे ।
वैसे ही जब सफेद कोरोंवाले सजल लोचनों से
मोर स्वागत कर उठेंगे,
तब तुम्हारा ग्रागे बढ़ना कठिन हो जाएगा
पर, चाहे जो उपाय करना पड़े,
तुम वेग से चल पड़ने का प्रयास करना ।

तुम्हारे आगमन से
दशार्ण देश में नई चहल-पहल शुरू हो जाएगी—
उपवनों की केवड़े की रौसों पर
केतकी की नुकीली कलियों के सहसा खिल उठने से
हरियाली छा जाएगी,
घरों में आकर ग्रास खानेवाले
कागा आदि पक्षियों के घोंसले बनाने की क्रिया से
गांवों के पीपल, बड़ आदि के वृक्ष भर उठेंगे,
काले पके फलों से
जामुनों के वन श्यामल हो उठेंगे।
फिर तो मानसरोवर जाने वाले हंस भी
वहां कुछ ही दिनों और ठहर सकेंगे।

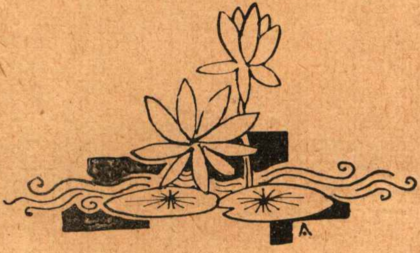

उसी दशार्ण की सारी दिशाओं में प्रसिद्ध
विदिशा नाम की राजधानी है।
वहां पहुंचते ही
तुम्हारा रसिया रूप सफल हो जाएगा।
बेतवा के तीर धीरे-धीरे गरजते हुए
जब तुम उसके लहराते मीठे जल का पान करोगे
तब लगेगा
जैसे चंचल भौंहोंवाले मुख का पान कर रहे हो,
अधरों को चूम रहे हो।

वहीं 'नीचगिरि' नाम का पर्वत है,
उसीपर विश्राम कर लेना।
वहां कदंबों के तरु हैं,
तुम्हारी परस से जब वे खिल उठेंगे,
तब लगेगा जैसे गिरि का तन
तुम्हारे स्वागत में पुलकित हो उठा है।
नीचगिरि की कंदराओं में
रसिया नागर वेश्याओं के साथ बिहार करते हैं।
उस रतिभोग की उठती गंध
नागरिकों के उद्दाम यौवन की कथा कहेगी।

देखो ! विश्राम कर चुकने पर फिर चल पड़ना ।
बन की नदियों के तीर
जूही की बगीचियां हैं,
जिनपर नई कलियां छाई हैं ।
उन कलियों को नये जल की फुहारों से सींच देना ।
उन बगीचियों की मालिनें
कानों में कमल धारण करती हैं,
वे कमल गालों का पसीना
निरंतर पोंछते रहने के कारण
कुम्हला गए होंगे ।
उन मालिनों को अपनी छांव से तनिक छूकर
शीतल करते अपनी राह निकल जाना ।

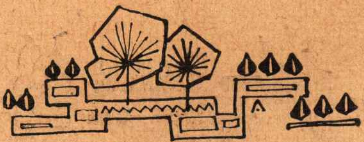

तुम्हारा मार्ग उत्तर को है,
उज्जैनी नगरी पच्छिम की ओर है।
इससे उधर जाते मार्ग से हटना पड़ेगा, घूमकर जाना होगा।
पर चाहे घूमकर ही क्यों न जाना पड़े,
उज्जैनी की ऊंची अटारियों की गोद का सुख
लूटने से न चूकना ;
क्योंकि वहां की नागरियों के
तुम्हारी बिजली से चकित-चौंधियाए नयनों की
चंचल चितवनों में अगर तुम न रमे,
उनके शिकार न हुए,
तो निश्चय सभी कुछ से वंचित ही रह गए !
जीवन तुम्हारा व्यर्थ बीता !

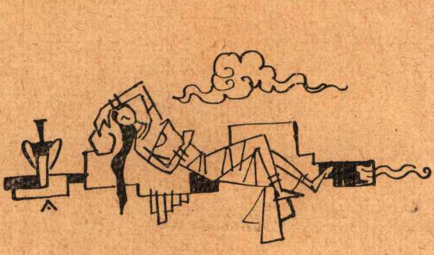

आगे निर्विंध्या नदी मिलेगी।
लोल लहरियों की थपकियों से
निकलते हंसों की पांत-रूपी करधनी बजाती,
मद्यपान की अधिकाई से मस्त बहती,
अपनी भंवर-रूपी नाभि उघाड़ती निर्विंध्या से
राह में समागम कर
उसका समस्त भीतरी रस चूस लेना।
निर्विंध्या का आचरण
प्रियतम से मिलती नारी का सा होगा।
प्रियतम के प्रति नारी का पहला आलाप
निःशब्द प्रणय-चेष्टाओं द्वारा ही संपन्न होता है।

उस नदी की धारा
तुम्हारे वियोग के कारण वेणी-सी पतली हो गई है,
तीर के तरुओं से झड़े पके पत्तों से
वह पीली पड़ गई है,
इस प्रकार, हे सौभाग्यशाली मेघ,
अपनी विरहावस्था द्वारा भी
वह तुम्हारे सौभाग्य को ही व्यक्त करती है।
सो, जिस उपाय से निर्विंध्या का दुबलापन दूर हो वह करना।
यानी परस द्वारा उसका एकांत-विरह हरकर,
बरसकर, उसे भर देना।

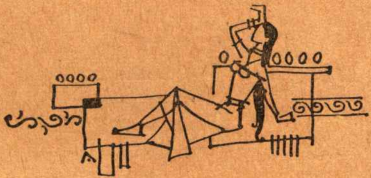

जहां गांवों के बूढ़े-सयाने
वत्सराज उदयन की ललित कथाओं के जानकार हैं,
उस अवन्ती जनपद में पहुंच
शालीना नगरी उज्जैनी को जाना।
उसकी बात पहले कह चुका हूं।
उज्जैनी क्या है,
स्वर्ग का ही एक खंड !
पुण्य का फल छीजने पर
स्वर्गवासियों को धरा पर उतर आना पड़ता है,
सो यह उज्जैनी
उन्हीं द्वारा बचाकर लाए पुण्यों के फल से निर्मित
स्वर्ग का ही उज्ज्वल खंड है।

वहां सिप्रा नदी बहती है
जिससे सिंचे पवन का आचरण
नारी से रतियाचना करने वाले
चापलूस प्रियतम का सा होता है।
वहां प्रातः खिले कमलों के पराग से बसा सिप्रा का पवन
सारसों के मदमस्त मधुर कूजन को
अपने डैनों पर ले उड़ता है।
वही पवन अंगों को अनुकूल शीतल परसकर
चाटुकार प्रियतम की भांति
नारियों की रतिविलास की थकान मिटाता है।

उज्जैनी में सुख के साधन अनेक हैं !
वहां अटारियों की खिड़कियों की जालियों से निकलता
नारियों के केश वासनेवाले धूप का धुआं
तुम्हारे श्यामल शरीर को पुष्ट करेगा,
भवनों के पालतू मोर भी
बंधुप्रेम से तुम्हें नृत्य का उपहार देंगे,
नाच-नाच तुम्हें भेंटेंगे, तुम्हारा स्वागत करेंगे।
वहां के, सुन्दर नारियों के
महावर लगे चरणों की छाप से अंकित फर्शवाले,
फूलों की सुगन्ध से महमह महलों में नगरी का वैभव देखते,
हे मेघ, तुम राह की थकान मिटा लेना।

AVDRao

वहीं चण्डीश्वर धाम है, महाकाल का मंदिर।
वहां स्वामी शिव के नीले कंठ जैसी श्यामल शोभावाले
तुम्हारे गात को शिव के गण सादर निहारेंगे।
उनका निहारना अंगीकार करते
तुम त्रिभुवन के स्वामी चंडीश्वर के पुण्यधाम को जाना।
कमलों के मकरंद से सुरभित,
गंधवती नदी में क्रीड़ा करती युवतियों के
अंग से धुल-धुलकर छूटे अंगरागादि
विलेपनों से बसी गीली हवा
उस पवित्र धाम के उपवन को झकझोर देती होगी।

जलधर, यदि तुम महाकाल के मंदिर
समय से पहुंच जाओ,
तो आगे न बढ़ना, वहीं रुक जाना
और सूर्य के आंखों से ओझल हो जाने तक
वहीं रुके रहना ।
पूजनीय शिव की सांझ की आरती के समय
जब तुम घोर-गंभीर ध्वनि से नगाड़े का कार्य संपन्न करोगे,
तब निश्चय अपने गर्जन का समुचित फल
प्राप्त कर लोगे ।

वहां मंदिर की अपनी वेश्याएं हैं—
देवता के संगीत में भाग लेनेवाली, चंवर डुलानेवाली।
नाचते समय चरणों की थिरकन से
उनकी करधनी बज उठती है,
दमकते रत्नों-से झिलमिल मूठोंवाले चंवर झलने से
उनके कोमल कर थक जाते हैं;
उन वेश्याओं के नखक्षतों को
अपनी नववर्षा की हलकी फुहारों से जो शीतल करोगे,
सींचकर सुख दोगे,
तो वे भी कृतज्ञता-भरे उत्तर में
तुमपर भौंरों की पांत के से अपने लम्बे कटाक्ष फेंक
तुम्हें निहाल कर देंगी।

आरती के बाद शिव का तांडवनृत्य प्रारम्भ होगा।
ताज़ा फूले जवापुष्पों-सी,
सांझ की ललाई धारण कर
नृत्यारम्भ में शिव के ऊपर उठे हुए
भुजमण्डल-रूपी वनखण्ड को घेरकर छा जाना।
उनके ऊपर फेंके भुजवन पर
तुम मंडलाकार छा जाना।
इससे सबका कल्याण होगा—
पशुपति शिव रक्त से गीला गजचर्म
धारण करने की इच्छा से विरत होंगे
और उस भयावह बीभत्स दृश्य से वंचित कृतज्ञ-सी भवानी
तुम्हारी भक्ति को एकटक निहारेंगी।

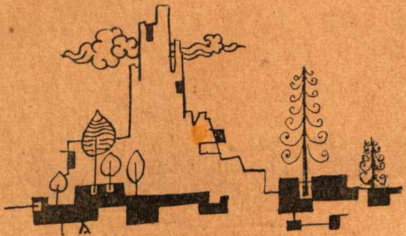

उस नगरी में रात के समय
प्रियतम से मिलने संकेतस्थान को जाती अभिसारिकाओं को
जब राजपथ पर घुप-अंधेरा छा जाने से
हाथ को हाथ न सूझता हो,
तब कसौटी पर कसी कनकरेखा की भांति
अपनी बिजली चमकाकर
उन्हें राह दिखा देना।
बरस-गरजकर कहीं मुखर न हो उठना;
कोमलहृदया नारियां स्वभाव से ही भयातुर होती हैं।

देर तक बार-बार चमकने-विलसने से
तुम्हारी पत्नी बिजली खिन्न हो गई होगी,
थक गई होगी।
सो तुम उस नगरी की
कबूतरों को आश्रय देनेवाली ऊंची बलभी (ओरियानी) की
किसी अटारी पर रात बिताकर, सूर्य का दर्शन होते ही,
बाकी राह तय करने फिर चल पड़ना।
एक बार मित्र का प्रयोजन साधने का बीड़ा उठा लेने पर
लोग फिर उसे पूरा करने में
ढिलाई नहीं करते।

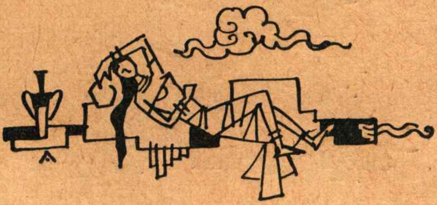

प्रणयी लोग रात बीतने पर
खंडिता नायिकाओं के आंसू प्रातः पोंछा करते हैं।
सो उस बेला तुम शीघ्र सूर्य की राह छोड़ देना,
क्योंकि ठीक तभी सूर्यदेव भी
खंडिता नलिनी के कमलमुख से
ओस-रूपी आंसू पोंछने लौट रहे होंगे।
तुम्हारे राह रोकने से उन्हें कुछ कम रोष न होगा,
वे आग हो उठेंगे।

गंभीरा नदी के दर्पणस्वच्छ मानस-रूपी निर्मल-प्रसन्न जल में
तुम्हारे सहज सुन्दर तन का प्रवेश होगा ही,
प्रतिबिम्ब पड़ेगा ही।
पर कहीं अति धीरता के कारण उसकी कोईं-सी उजली
और उछलती मछली-सी चंचल चितवनों को
व्यर्थ न कर देना,
उनकी उपेक्षा न कर देना।

उस नदी का नीलसलिल तट से नीचे उतर गया होगा,
जिसे उसपर झुकी बेंत की डालें छू रही होंगी।
लगेगा, जैसे गंभीरा का नीलवसन (साड़ी)
नीचे सरकता नितंबों को नंगा करता जा रहा है
और नदी अपने बेंत-रूपी करों से
उसे रोकती-संभालती जा रही है।
मित्र मेघ, उसे फिर भी सरकाकर
उसपर लम्बे झुके तुम्हारा वहां से प्रस्थान
भला क्योंकर हो सकेगा,
कठिन ही होगा।
भला ऐसा कौन है
जो उस स्वाद का जानकार होकर भी
नंगी जांघों को छोड़कर चला जा सके!

तुम्हारी फुहारों के स्पर्श से
भाप छोड़ती धरा की गंध से जो पवन सुरभित है;
सूंड़ों की नली में गुड़गुड़ाकर गज उसका पान करते हैं,
जंगली गूलरों को उसने गदरा दिया है;
वह शीतल वायु
ऊपर देवगिरि की ओर जाने की इच्छा करनेवाले तुमको
नीचे से ऊपर की ओर उठा ले जाएगी।

वहां, देवगिरि पर,
स्कन्द का नियत निवास है।
तुम जलधरवृत्ति छोड़ थोड़ी देर के लिए
पुष्पमेघ बन जाना।
गगन-गंगा के (पवित्र) जल से भीगे फूलों को बरसाकर
तुम स्कन्द को स्नान कराना।
ललाट पर नवलचंद्र धारण करनेवाले भगवान शंकर ने
देवताओं की सेना की रक्षा के लिए
सूर्य से भी प्रखर जिस तेज को
अग्नि के मुख में रखा था,
स्कन्द वही तेज है।

फिर, जिसके ज्योतिरेखाओं से बने घेरोंवाले,
गिरे पंख को,
पुत्र-प्रेम से प्रेरित भवानी
कमलदल की जगह कान में धारण करती हैं,
शिव की चंद्रमा की चांदनी से श्वेत नेत्रकोरोंवाले उस मोर को
गिरि को गुंजा देनेवाली
अपनी गुरुगर्जना द्वारा नचाना।

सरकंडे के वन में उत्पन्न
उस देवता की पूजा सम्पन्न करने के बाद,
जब वीणाधारी सिद्ध-दम्पती
तुम्हारी बूंदों के डर से राह छोड़ दें,
तब तुम आगे बढ़ना,
और तब चंबल का मान रखने के लिए नीचे झुक पड़ना,
क्योंकि वह नदी
गोमेध करनेवाले राजा रन्तिदेव की कीर्ति है,
जो जलधारा का रूप धारण कर धरा पर उबल पड़ी है।

विष्णु का श्याम रंग धारण करनेवाले मेघ,
जब तुम उस चंबल नदी पर
उसका जल पीने के लिए झुकोगे,
तब, चौड़ी होती हुई भी,
दूरी के कारण उसकी धारा पतली लगेगी।
और जो गगनचारी उसे एकटक निहारेंगे,
तो निश्चय ऐसा लगेगा
कि पृथ्वी के गले में मोतियों की एक लड़ी पड़ी है,
जिसके मोतियों के बीच
नीलम का बड़ा मनका गुंथा है।

चंबल को पार कर अपने सुन्दर गात को
दशपुर की ललनाओं के नेत्रों का आकर्षण बनाते
तुम आगे बढ़ जाना।
दशपुर की नारियां भ्रूविलास में बड़ी निपुण हैं,
चितवनों के खेल में अभ्यस्त हैं।
जब वे पलकों को ऊपर उठाती हैं,
तब लोचनों की श्वेत-श्याम आभा देखते ही बनती है—
फेंके हुए कटाक्ष में
आंखों के श्वेतकोरों के पीछे की बरौनियों की काली कतार
कुछ ऐसे चलती है,
जैसे किसीके फेंके जुही के फूल के पीछे
भौंरों की पांत उड़ी जा रही हो।

A.V.D. RAO

आगे ब्रह्मावर्त्त जनपद है ।
उसपर अपनी छाया डालते,
क्षत्रियों के संहार के सूचक कुरुक्षेत्र पहुंच जाना ।
वहां गांडीवधारी अर्जुन ने
राजाओं पर तीखे तीरों की वर्षा कर
उनके मुखों की वही गति कर डाली थी,
जो स्वयं तुम अपनी बूंदों की वर्षा से
कमलों की कर डालते हो ।

बन्धुप्रेम के वशीभूत,
कौरव-पांडवों के युद्ध से विरक्त हो,
प्रियापत्नी रेवती के प्रतिबिम्ब से अंकित,
मन के अनुकूल, स्वादु मदिरा छोड़
बलराम जिस सरस्वती के तीर जा रमे थे,
उसका जल जब तुम पिओगे
तब तुम्हारा मानस सर्वथा शुद्ध हो जाएगा,
बस रंग-भर श्याम रह जाएगा ।

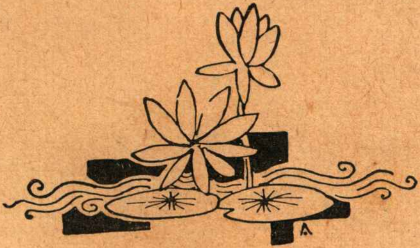

वहां से कनखल जाना,
शैलराज हिमांचल से उतरती उन गंगा के पास
जो सगरपुत्रों के लिए
स्वर्ग तक पहुंचनेवाली सीढ़ी बन गई थीं।
गंगा आकाश से पहले शिव की जटा में उतरी थीं।
इनके इस प्रकार
स्वामी के मस्तक के जटाजाल में उतरने से
पार्वती स्वाभाविक ही चिढ़ गईं।
पार्वती के चढ़े तेवरों को
अपनी फेन-रूपी व्यंग्य-भरी मुस्कान से तिरस्कृत कर
गंगा ने तब चंद्रलग्न लहर-रूपी हाथों से
शिव के केश पकड़ लिए थे।

आकाश में दिग्गज की भांति,
पिछला आधा अंग आगे को झुकाए,
जब तुम गंगा के स्फटिक-स्वच्छ जल का पान करना चाहोगे,
तब उसकी धारा पर
तेज़ी से गिरती तुम्हारी छाया से ऐसा लगेगा,
जैसे प्रयाग से भिन्न इस स्थल पर भी
यमुना का गंगा से अभिराम संगम बन गया है।

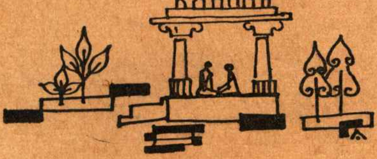

जिसकी शिलाएं,
उनपर बैठे कस्तूरी मृगों की नाभि की गंध से सुरभित हैं,
उस हिम से श्वेत पर्वत पर पहुंच,
राह की थकान मिटाने,
उसकी चोटी पर बैठे तुम्हारी शोभा ऐसी लगेगी,
जैसे शंभु के नन्दो ने
कीचड़ उछालकर अपने सींग पर लगा ली हो।

वायु से प्रेरित
देवदारुओं की डालियों की रगड़ से उत्पन्न दावाग्नि
अपनी गिरती चिनगारियों से
चंवरी गायों की पूंछ के बाल जला डालती है।
वह दावाग्नि
अगर उस पर्वत को जला रही हो,
तो तुम हज़ार धारों से बरसकर उसे बुझा देना।
उत्तम जनों का धन
दुखियों का दुःख दूर करके ही सफल होता है।

यदि हिमालय में
क्रुद्ध होकर उछलते हुए शरभ मृग,
उनके मार्ग को छोड़कर विचरनेवाले तुम्हारी ओर
अपने आप ही अपने अंग-भंग करने के लिए वेग से उछलें,
तो तुम भी उनपर धारासार ओले बरसाकर
उन्हें कुचल देना।
निरर्थक कार्य में कूदनेवाला भला कौन है,
जो तिरस्कार का पात्र नहीं बनता !

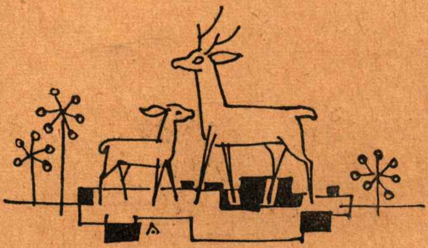

वहां शिला पर शंभु के चरणों की छाप है,
जिसपर सिद्ध सदा पूजा चढ़ाते रहते हैं।
तुम भी भक्ति से विनम्र हो उसकी परिक्रमा कर लेना।
उन चरणों के दर्शन से पापमुक्त हो
श्रद्धावान जन देहत्याग के बाद
शिव के गणों का चिरस्थायी पद प्राप्त करते हैं।

बांसों के छेदों में हवा के भर जाने से
वे मधुर बज उठते हैं
और किन्नरियां उनसे राग मिलाकर
शिव द्वारा त्रिपुरासुर की विजय के गीत गाती हैं।
यदि तभी, हे मेघ, गुहाओं को गुंजानेवाला तुम्हारा ध्वनन
मृदंग-नाद की भांति उनसे मिल गया,
फिर तो वहां पशुपति-पूजा का समूचा साज ही
इकट्ठा हो जाएगा।

हिमालय के बहिरंग के आकर्षक दृश्यों को देखते,
उन्हें लांघते तुम आगे बढ़ जाना,
परशुराम के बनाए उनके यश के सूचक,
क्रौंचरंध्र नामक हंसों के आने-जाने के द्वार की ओर।
उस मार्ग से तनिक तिरछे-लम्बे होकर
जब तुम वेग से
उत्तर दिशा की ओर निकलोगे,
तब लगेगा जैसे बलिछलन के लिए,
उसका सर्वस्व नापने के अर्थ,
उठा हुआ त्रिविक्रम विष्णु का श्याम चरण हो।

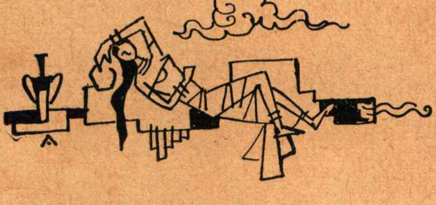

ग्रौर ऊपर चढ़कर, हे मेघ,
तुम उस कैलास पर्वत के ग्रतिथि बनना
जिसके जोड़-जोड़ ग्रपनी भुजाग्रों से झकझोरकर
रावण ने ढीले कर दिए थे,
ग्रौर जो ग्रपनी स्फटिक-तुल्य चिकनाहट के कारण
देवांगनाग्रों के लिए दर्पण बन गया है।
उसकी बर्फ से ढकी ऊंची चोटियां
कोंईं के फूल की सफेद पंखुड़ियों की तरह
ग्राकाश में फैली हुई हैं,
लगता है, जैसे शिव का नित्य का ग्रट्टहास इकट्ठा होकर
ठोस राशि हो गया है, जम गया है।
उस शीतप्रधान देश में सभी कुछ जम जाया करता है;
कवि की कल्पना है कि हंसी का शब्द भी
जमकर राशीभूत हो जाया करता होगा।

उस हाल के कटे हाथीदांत के से
श्वेत कैलास की ढलान पर
जब चिकने घुटे अंजन की भांति
तुम जा बैठोगे,
तब तुम्हारी शोभा अपलक निहारने योग्य होगी,
लगेगा, जैसे गोरे बलराम ने
कन्धे पर श्याम वसन डाल लिया हो।

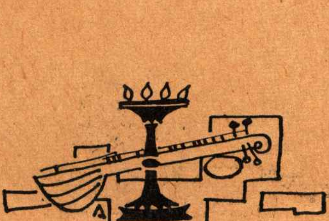

तब शंभु के उस क्रीड़ाशैल कैलास पर
यदि पार्वती सर्प-कंगन उतारे
शिव के हाथ में हाथ डाले विचर रही हों,
तो, हे जलधर, झट आगे बढ़कर
अपने जल को भीतर ही भीतर ठोस कर
मणितट पर उनके चढ़ने के लायक
अपना शरीर ऊंचा-नीचा कर सीढ़ी बन जाना।

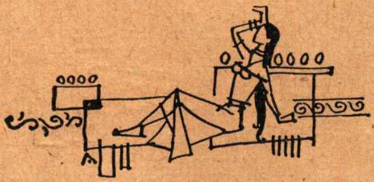

वहां देवांगनाएं
वज्र-कंगन में जड़े हीरे से छेद-छेदकर
निश्चय तुम्हारे शरीर को
फव्वारा बना लेंगी ।
सखे, धूप में इस प्रकार तुमसे खेलती हुई
वे यदि तुम्हें न छोड़ें,
तो तुम कठोर गर्जना कर
उन्हें डरा देना ।

स्वर्णकमल उत्पन्न करनेवाले मानसरोवर का जल पीना,
उसी काल सहसा ऐरावत के मुंह पर
अपने शरीर का झीना पट प्रीतिक्रीड़ा में डाल देना,
या कल्पवृक्ष के पत्तों को
इस प्रकार झकझोरना
जैसे हवा महीन दुपट्टे को झकझोरकर उड़ा देती है।
ऐसे खेलों द्वारा, हे मेघ, उस कैलास पर्वत पर
अपना मन बहलाना।

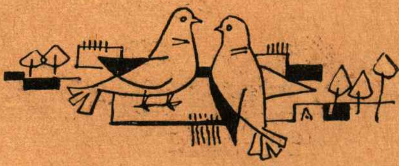

मनचाहा विचरण करनेवाले मेघ,
जिसकी गंगा-रूपी साड़ी कटि से नीचे सरक गई है,
उस अलका को
अपने प्रणयी कैलास की गोद में बैठी देखकर
तुम पहचान न लो,
यह कैसे हो सकता है !
निश्चय पहचान लोगे ।
वर्षाकाल में जब तुम उसकी ऊंची अटारियों के ऊपर छाकर
झर पड़ोगे, तब उस झड़ी से अलका ऐसी लगेगी,
जैसे किसी कामिनी ने अपने घुंघराले बालों में
मोतियों का जाल गूंथ लिया हो।

उत्तर मेघ

सखे मेघ, अलका के प्रासादों में
तुम्हारे गुणों से मिलते अनेक गुण हैं—
तुममें दामिनी (बिजली) का निवास है,
तो उनमें भी रसीली नारियां रहती हैं;
तुम्हारे पास सातों रंगों का इन्द्रधनुष है,
तो उधर अलका के भवन भी भित्तिचित्रों से रंगे हैं;
तुम्हारे पास मधुर-गंभीर गर्जन है,
तो वहां भी संगीत के अर्थ मृदंग ठनकते रहते हैं;
तुम्हारे भीतर निर्मल जल भरा है,
तो उसके महलों की भूमि भी मणिमयी है,
संगमरमर की बनी;
और तुम जो आकाश की चोटी छू लेते हो,
तो अलका के महल भी गगनचुंबी हैं।

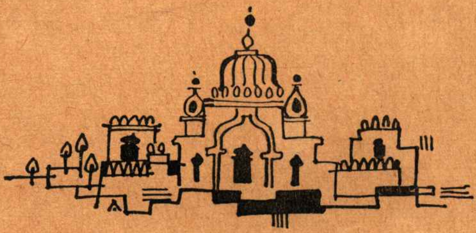

अलका की नारियों के सिंगार अनंत हैं।
वे बदलती ऋतुओं के फूलों से अपना सिंगार करती हैं—
हाथ में वे लीलाकमल,
डंडी के साथ खिला या संपुट कमल,
धारण करती हैं;
घुंघराले काले बालों में सफेद जुही के फूल गूंथती हैं।
आलता लगे लाल होंठों और गालों पर
लोध का चूर्ण मलकर
वे उन्हें पीताभ कर लेती हैं।
जूड़े के फन्दों में वे नये कुरबक के फूल पहनती हैं;
कानों में सुन्दर सिरस के फूल धारण करती हैं
और वर्षागम पर वे
अपनी मांग कदंब के फूलों से सजाती हैं।

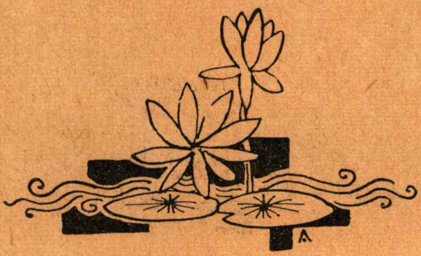

अलका के उन संगमरमर से बने महलों के निर्मल फर्श में
तारों की झिलमिल परछाइयां
कुसुम-रचना किया करती हैं।
वहीं यक्ष छबीली यक्षिणियों के साथ निवास करते हैं।
जब तुम्हारी गंभीर ध्वनि की भांति
मृदंग हलके ठनकने लगते हैं,
तभी यक्षदम्पती
कल्पवृक्ष से निकली हुई
'रतिफल' नाम की मदिरा पान करते हैं,
मदिरा, जिसका परिणाम रति हुआ करता है।

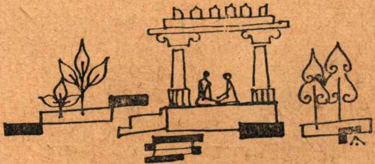

वहां देवताओं की कमनीय यक्षकुमारियों को
मंदाकिनी गंगा की निहारिकाओं से शीतल वायु परसती है।
तीर के मनार के पेड़
उन्हें छाया देकर धूप से उनकी रक्षा करते हैं।
कन्याएं मन्दाकिनी की सुनहरी रेत में
मुट्ठी में मणियां भर-भर
उन्हें छिपाने और खोजने के खेल खेलती हैं।

वहां अलका में, कामी प्रियतम,
लाल-लाल अधरोंवाली प्रेमिकाओं के
नीवीबंधों के टूट जाने से ढीले पड़े हुए वस्त्र को
जब खींचने लगते हैं,
तो लज्जा के कारण विमूढ़ बनी वे रमणियां,
सामने रखे किरणें छिटकाते रत्नदीपों पर
मुट्ठी भर-भर कुंकुम फेंककर बुझाने की असमर्थ चेष्टा करती हैं;
क्योंकि रत्नदीप बुझाए नहीं जा सकते ।

अलका के सतखंडे प्रासादों की अटारियों में
वायु की सहायता से झट प्रवेश कर
तुम्हारे जैसे मेघ
अपने नये जलकणों से उनकी दीवारों के चित्र बिगाड़ देते हैं।
फिर धुएं की तरह निकल भागने में कुशल,
अपराध की शंका से भयभीत
वे खिड़की से तेज़ी से निकल पड़ते हैं।

वहां आधी रात में
जब सुरत के बाद रमणियां
अपने प्रियतमों के गाढ़ालिंगन में बंधी
थकी पड़ी होती हैं,
तब, मेघ, तुम्हारे वहां छाए न होने के कारण,
चन्द्रमा की कोमल किरणें
खिड़की की राह प्रवेश कर
छत से झालरों में लटकी चन्द्रकान्त मणियों पर पड़ती हैं।
उनके स्पर्श से मणियों से
शीतल जल की बूंदें टपकने लगती हैं
और नीचे पड़ी रतिशिथिला नारियों की थकान मिटाती हैं।

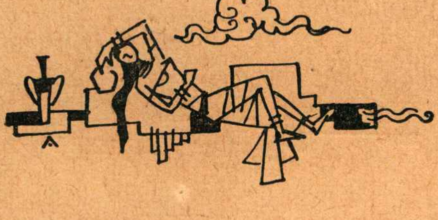

उन भवनों में
अक्षय धनराशि संजोए कामी यक्ष
नित्य सुन्दरी अप्सरा-वारांगनाओं से प्रेमालाप करते
मधुर स्वर से कुबेर का यश गानेवाले किन्नरों के साथ
अलका के चित्ररथ नामक बाहरी उपवन में
विहार करते हैं ।

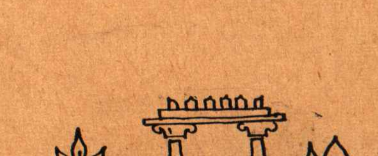

अलका में अभिसार की प्रभुता है।
अभिसार से सूर्योदय समय लौटनेवाली कामिनियों का मार्ग,
उनके तीव्र गति से छिपकर लौटने के कारण,
उनके तन से गिरी अनेक वस्तुओं से सूचित होता है—
घुंघराले बालों से झड़े मनार के फूलों से,
कानों से गिरी कनककमलों की कामदार सुनहरी पंखुड़ियों से,
बालों को ढकनेवाले मोतियों के टूटे बिखरे जाल से,
और स्तनों पर के टूटकर गिर गए हारों से।

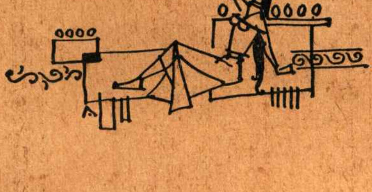

वहां, कुबेर के मित्र शंकर को साक्षात् रहते जानकर,
कामदेव अपना भौंरों की डोरीवाला धनुष
भय के कारण प्रायः धारण नहीं करता ।
पर इससे कामियों पर चोट करने के उसके कार्य में
कोई बाधा नहीं पड़ती,
क्योंकि उसका वह उद्देश्य
अलका की चतुर नागरियां अपने विलासविभ्रम द्वारा,
अपने नयनों के बांके तेवरों के
कामियों पर अमोघ बाण छोड़ पूरा कर देती हैं ।

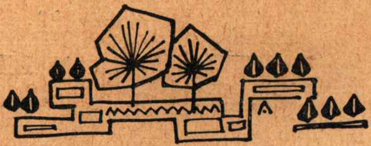

अलका नगरी की स्त्रियों के सिंगार की समूची सामग्री
अकेला कल्पवृक्ष
मांगने-मात्र से प्रस्तुत कर देता है,
उदाहरणार्थ, रंगबिरंगे वस्त्र,
चितवनों में चंचल आकर्षण भरने में निपुण मदिरा,
विविध रंगों के फूल और पत्तों के दल,
अनेकानेक आभूषण,
चरणकमलों को भांति-भांति से रंगने के लिए महावर।

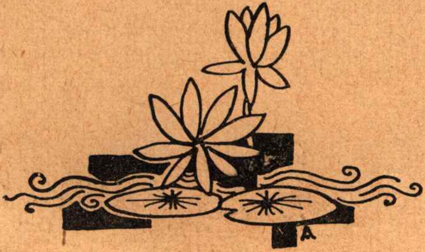

वहीं, धनपति कुबेर के भवन से कुछ उत्तर
हमारा प्रासाद है।
इन्द्रधनुष के समान अपने सुन्दर तोरण से
वह दूर से ही पहचाना जा सकता है।
उस प्रासाद के एक ओर
मन्दार का बालतरु है,
जिसे मेरी प्रिया ने पुत्रवत् पालकर बड़ा किया है।
वह अपने फूलों के गुच्छों से लद जाता है,
उनके भार से झुक जाया करता है।
उन्हें हाथ बढ़ाकर तोड़ा जा सकता है।

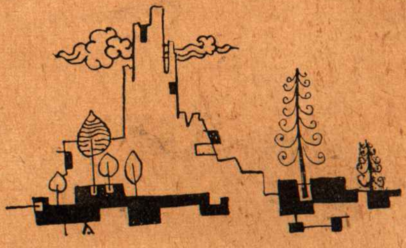

मेरे उस भवन में एक बावड़ी है,
जिसकी जल तक चली गई सीढ़ियां
पन्ने की शिलाओं से जड़ी हैं
और जिसका जल
चिकनी बिल्लौर की नालोंवाले खिले स्वर्णकमलों से ढका है।
उसमें रहनेवाले हंस दुःखों की अवहेलना कर,
हे मेघ, तुम्हारे आगमन के बावजूद
मानसरोवर के इतने निकट होते हुए भी
वहां जाने की इच्छा नहीं करते।

बावड़ी के तीर
एक क्रीड़ाशैल बना है,
जिसकी चोटी में नीलम जड़े हैं
और जिसके चारों ओर
दौड़नेवाली केलों की बाढ़ बस देखने ही लायक है ।
मित्र, तुम्हें छोरों से बिजलियां चमकाते देखकर
भय से कातर हो
बस अपनी प्रिया के उसी प्रिय पर्वत की
याद करने लगता हूं ।

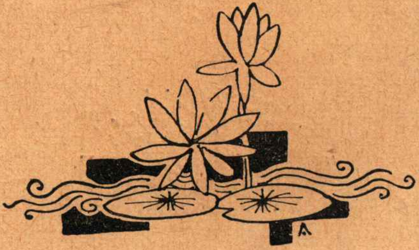

वहीं कुरबक तरुओं की बाढ़ से घिरे
माधवीमंडप के निकट ही
एक ओर चंचल पत्तों, लाल फूलोंवाला अशोक का वृक्ष है ;
दूसरी ओर मौलसिरी का पेड़ है ।
इनमें से एक मेरी ही भांति
दोहद के बहाने
तुम्हारी सखी, मेरी प्रिया के बायें पैर की
परस का अभिलाषी है,
दूसरा उसके मुख की मदिरा का ।

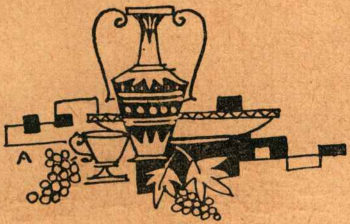

उन दोनों के बीच
पक्षी के बसेरे के लिए स्वर्ण का बना दण्ड है,
जिसके ऊपरी सिरे पर तो
स्फटिक की पटिया है
और नीचे मूल में
नये बांस के हरे रंग के पन्ने जड़े हैं।
उसी दण्ड पर संध्या होने पर
नीले कंठवाला तुम्हारा मित्र मोर बसेरा लेता है।
उस मोर को मेरी प्रिया
बजनेवाले कंगन पहने हाथों से
मधुर ताल दे-देकर नचाती है।

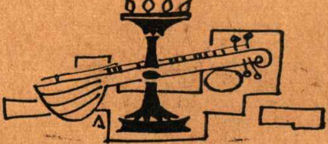

हे निपुण मित्र,
मन में रखे इन लक्षणों
और द्वार के ऊपर दोनों ओर चित्रित
शंख तथा पद्म की आकृतियों से
तुम मेरा वह भवन पहचान लोगे।
वह इस समय मेरे वियोग के कारण
निश्चय उदास हो गया होगा।
सूर्य के विरह में
क्या कमलिनी की पूरी शोभा सम्भव है!

वेग से नीचे उतरने के लिए
तुम शीघ्र बालगज का रूप धारण कर
पहले बताए क्रीड़ाशैल की सुन्दर चोटी पर जा बैठना।
उसके बाद जुगनू की भांति दिखती
हलका प्रकाश करनेवाली बिजली रूपी अपनी दृष्टि
तुम भवन के भीतर फेंकना।

छरहरी, तरुणी, नुकीले दांतोंवाली,
पके कुंदरू के से लाल होंठोंवाली,
पतली कटिवाली,
चितवन में डरी मृगी की सी, गहरी नाभिवाली,
भारी नितंबों के कारण अलसाकर चलती,
स्तनों के भार से ज़रा-ज़रा झुकी हुई
मेरी पत्नी वहां की युवतियों में
मानो ब्रह्मा की पहली सृष्टि है।

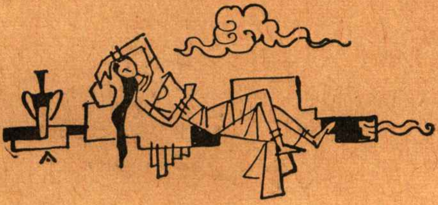

मुझ सहचर के दूर चले जाने से
चकवी की भांति अकेली,
नपे-तुले शब्द बोलनेवाली उस प्रिया को
तुम मेरी दूसरी जान ही समझो ।
प्रबल विरह-वेदना की मारी वह बाला
विरह के कारण
इन लंबे लगनेवाले, कठिनाई से कटनेवाले दिनों में,
मैं समझता हूं,
पाले की मारी कमलिनी की तरह
अन्य रूप की हो गई होगी !

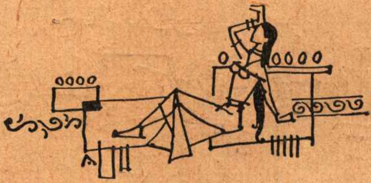

निरंतर रोते रहने से
उस प्रिया के नेत्र सूज गए होंगे।
तत्ती सांसें छोड़ते रहने से
उसके निचले होंठ का रंग उड़ गया होगा।
सूखी अलकों के बिखर जाने के कारण
हाथ पर रखा उसका मुख समूचा न दिखता होगा;
तुमसे ढक जाने से शोभाहीन चन्द्रमा की भांति
कान्तिहीन हो गया होगा।

वह मेरी प्रिया या तो देवताओं को पूजा चढ़ाती हुई
तुम्हें दृष्टिगोचर होगी,
या अपनी कल्पना के अनुसार
मेरे दुर्बल विरही तन का चित्र बनाती मिलेगी,
या पिंजड़े की मैना से
मधुर बोली में पूछती होगी—
रसिके, क्या कभी स्वामी को तू भी याद करती है ?
भला तू भी तो उन्हें बड़ी प्रिय थी !

या, सौम्य, तुम उसे देखोगे मैले वस्त्र पहने,
गोद में वीणा डाले,
मेरे नाम के गीत गाने का प्रयत्न करते ।
अपने नयनों से निरंतर गिरते आंसुओं से भीगे
वीणा के तारों को
यदि जैसे-तैसे पोंछ भी लेती होगी,
तो बेचारी अपने आप
बार-बार दुहराई मूर्छना को ही भूल जाती होगी !

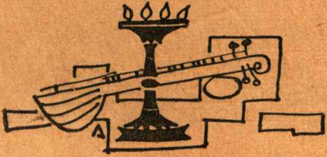

या मेरे शाप-सम्बन्धी
विरह की अवधि के बचे मासों के दिन
देहली पर चढ़ाए पूजा के फूलों को
भूमि पर रख-रखकर गिन रही होगी ;
या पहले, संयोग के समय,
मेरे साथ किए विलास की मन ही मन
याद करती होगी ।
प्रियतमों के वियोग में नारियों के
प्रायः यही मनबहलाव हुआ करते हैं ।

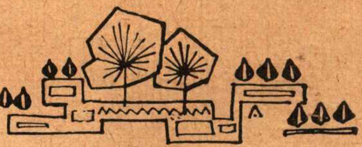

इस प्रकार दिन में भांति-भांति की क्रियाओं में
बझे रहने के कारण
मेरा वियोग तुम्हारी सखी को इतना न सताता होगा;
पर सोचता हूं,
रात में जब विनोद के ये साधन न रहते होंगे,
तब उसकी वेदना बेहद बढ़ जाती होगी।
सो, हे मेघ, आधी रात को विरहव्रत पालती,
भूमि पर उनींदी, उचटी नींद सोती
उस साध्वी को मेरे संदेश से सुखी बनाने के लिए
भवन की खिड़की में बैठकर तुम देखना।

मन की व्याधि के कारण दुबली,
विरहव्रत की पत्तों आदि से रची शय्या पर
एक ही करवट सोई,
वह ऐसी लगती होगी, मानो पूर्व दिशा के क्षितिज पर
चन्द्रमा की बची हुई बस एक कला की मूर्ति हो।
संयोग-काल में पहले जो रात मेरे साथ विलास करते
क्षण-भर में बीत जाया करती थी,
मेघ, तुम देखोगे कि वही रात उसे
अब निरंतर गिरते गरम आंसुओं के साथ
पहाड़ की तरह हो जाती होगी।

खिड़की की जाली से छन-छनकर आती
अमृतशीतल चन्द्रकिरणों को
पूर्वस्नेह से भेंटने के लिए उसके नेत्र बढ़ते होंगे ।
फिर दुःख की मारी
वह अपनी आंसुओं-भरी आंखों को
भारी पलकों से मूंद लेती होगी,
ठीक उस स्थलकमलिनी की तरह
जो बदली के दिन में न तो भरपूर खिल ही पाती है,
न बन्द ही हो पाती है,
न जागती है, न सोती है ।
मेरी प्रिया को तुम इस स्थिति में पाओगे ।

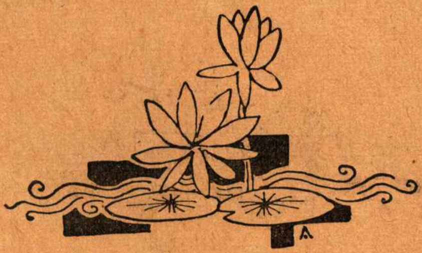

अधर-पल्लव को सुखानेवाली तत्ती सांसों की फूंक से
तेलहीन, रूखी, स्नान के कारण गाल पर
गिर-गिर आनेवाली लट को
वह बार-बार हटा रही होगी।
किसी प्रकार स्वपन में ही
मेरे साथ समागम का सुख मिल जाए,
इस आशा से नींद का आह्वान करती होगी;
पर निरंतर आंसुओं के उमड़ते रहने से
नींद की वह जगह भी भर जाती होगी।

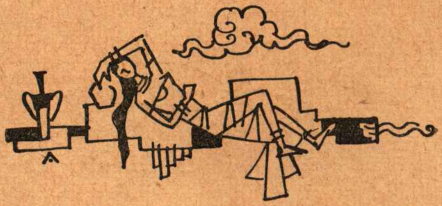

विरह के पहले दिन
बिना गूंथे जिस वेणी को मैंने बांधा था,
और जिसे शाप की अवधि बीतने पर
चिंतामुक्त हो मैं ही खोलूंगा,
उस चुभनी, रूखी, उभड़ी, एक लटवाली चोटी को
बढ़े नाखूनोंवाले हाथ से
वह गाल से बराबर सरका रही होगी ।

वह अबला सारे आभूषण उतार,
विविध प्रकार के दुःख सहती
अपने दुर्बल तन को शय्या पर जैसे-तैसे रख पाती होगी।
उसे देख निश्चय तुम्हारी आंखों से
नई बूंदों के आंसू बरस पड़ेंगे।
सभी कोमल हृदयवाले जनों का चित्त
प्रायः करुणा से भरा होता है।

मुझमें तुम्हारी सखी का जो घना स्नेह है
उसे जानकर ही,
अपने इस पहले विरह के अवसर पर,
उसकी इस दु:खी दशा का अटकल लगा रहा हूं।
कुछ यह न समझना कि उसके प्रेम का झूठा प्रदर्शन कर
अपने सौभाग्य की सूचना दे रहा हूं।
मेरे भाई, मैंने जो कुछ कहा है,
वह सब तो तुम शीघ्र ही प्रत्यक्ष देख लोगे।

मुंह पर लटककर फैल जानेवाली अलकों के कारण
कटाक्ष फेंकने में असमर्थ,
काजल के अभाव में, चिकनाई से रहित सूना लगनेवाला,
मदिरा तज देने से भौंह-संचालन की क्रिया भूला हुआ
उस मृगनयनी का बायां नयन
तुम्हारे पहुंचने पर, सोचता हूं, कुछ ऐसे फड़क उठेगा,
जैसे मछली के चलने से कमल फड़क उठता है।
वह हिलते कमल की सुन्दरता धारण करेगा।

न केवल बाईं आंख ही,
बल्कि रस-भरे केले के खंभ-सी गोरी
उसकी वह बाईं जांघ भी फड़क उठेगी,
जिसे संभोग के बाद
मैं कभी हाथों से भरपूर दबाया करता था।
पर अब तो मेरे अभाव में,
दैवयोग से मेरे नखों से किए
जांघों पर के चिह्न भी मिट गए हैं
और चिरपरिचित मोतियों के जाल का अलंकार भी
उसने तज दिया है।
अब उन जांघों पर न तो नख-चिह्न ही रहे,
न आभूषण ही।

जलद, तुम्हारे वहां पहुंचने के समय
यदि वह सुख की नींद सो रही हो,
तब तुम गरजना बन्द कर, शांत हो (चुपचाप),
पहर-भर निश्चय उसके जगने की राह देखना,
कहीं ऐसा न हो कि स्वप्न में
जैसे-तैसे उपलब्ध मुझ प्रणयी के गाढ़ालिंगन के समय
गले में डाली हुई बांहों की गांठ खुल जाए !

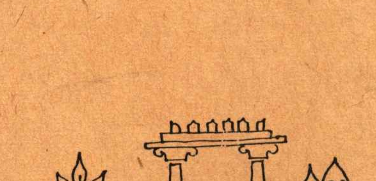

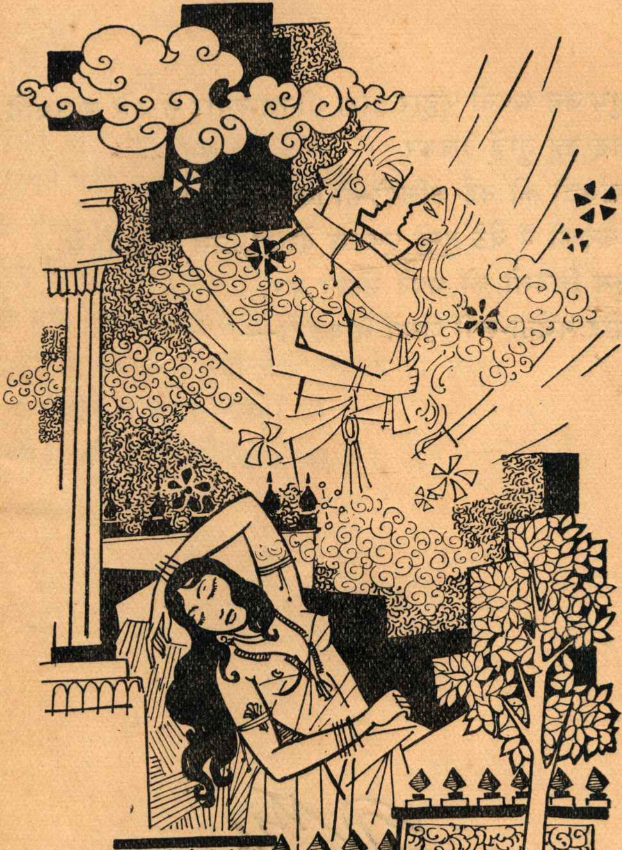
A.V.D.RAO

तुम जब अपनी फुहार द्वारा शीतल बयार से उसे जगाओगे,
तब वह तुम्हें देखकर
मालती की नई कलियों-सी खिल उठेगी ;
खिड़की में बैठे तुम्हें एकटक देखती, उस मानिनी से,
तुम बिजली को अपने भीतर कर,
धीर गर्जना-रूपी शब्दों में कहना—

सुहागिन, मुझ मेघ को
तुम अपने पति का प्रिय मित्र जानो।
उसके संदेश को हिये में डालकर
तुम्हारे निकट आया हूं।
जानो मुझे वह मेघ जो अपने धीर-गंभीर मधुर नाद से,
प्रियाओं की विरह में बंधी वेणी खोलने को उत्सुक,
राह में बिलमे परदेशी पतियों को
घर शीघ्र लौटने को प्रेरित करता हूं।

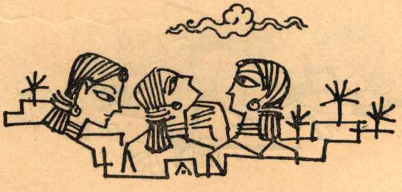

तुम्हारे इस प्रकार कहने पर,
राम का संदेश लाए हनुमान के प्रति सीता की भांति
उत्कंठा से फूले हृदय से, वह तुमको निहारेगी,
तुम्हारा सत्कार करेगी,
सर्वथा एकाग्रचित्त हो संदेशा सुनेगी।
जानो, सखे, कि नारियों के लिए
पति के मित्र द्वारा पहुंचाया प्रियतम का संदेश
उसके साक्षात् संयोग से कुछ ही घटकर होता है।

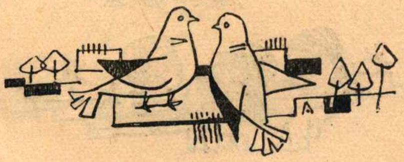

चिरंजीव, मेरी प्रार्थना मान
और अपनी परोपकार-भावना से प्रेरित हो,
मेरी उस प्रिया से इस प्रकार कहना—
अबले, तुम्हारा सहचर रामगिरि के आश्रम में है,
अभी जीवित है।
तुम्हारा वह विरही तुम्हारी कुशल पूछता है।
विपदाओं के सहज शिकार प्राणियों का
सबसे पहले यही पूछना उचित भी है।

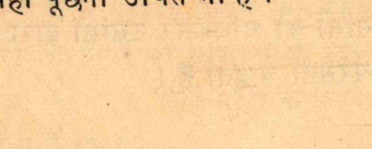

तुम्हारा वह दूरवर्ती सहचर
शाप से मजबूर, बैरी विधाता द्वारा रोकी राह से मजबूर,
केवल अपने संकल्पों द्वारा मानस में ही
तुमसे एकीभाव हो रहा है।
तुम्हारे क्षीण गात को वह अपने क्षीणतर गात से,
तुम्हारे विरह-जनित घने ताप को अपने घनतर ताप से,
तुम्हारे आंसुओं को अपने अधिकतर आंसुओं से,
तुम्हारी उत्कंठा को अविराम उत्कंठा द्वारा,
तुम्हारी उसांसों को अधिकतर उसांसों द्वारा ही
वह भेंटना-परसना चाहता है।

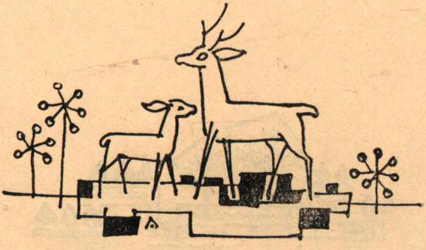

जो सखियों के सामने कहने योग्य बात भो
गालों को छू लेने के लोभ से
कान में ही कहने को आतुर रहता था,
आंखों और कानों की पहुंच से दूर तुम्हारे उस प्रियतम ने
विरह-वेदना की स्थिति में जैसे-तैसे कुछ संदेश के शब्द जोड़
मेरे मुंह से इस प्रकार कहलाया है—

प्रिये, श्यामालता में तुम्हारे छरहरे तन की छटा पा लेता हूं,
चितवन डरी हिरनियों की आंखों में पा लेता हूं,
मुंह की शोभा चंद्रमा में, केश मोरों के पंखदल में।
तुम्हारी भौंहों के तेवर
नदी की हलकी चोखी लहरियों में देख लेता हूं।
पर हाय ! कठोरहृदये,
कहीं भी एकत्र तुम्हारी समता नहीं मिलती।

प्यार में रूठी, मान किए हुए,
तुम्हारे रूप को गेरू से शिला पर बनाकर
जब मानभंजन के लिए
तुम्हारे चरणों में पड़ा अपना चित्र बनाने चलता हूं,
तभी आंसू बार-बार उमड़कर
मेरी दृष्टि बन्द कर देते हैं,
नज़र रूंध देते हैं।
देखो, क्रूर दैव चित्र तक में
हमारा संयोग नहीं सह पाता !

AVDRao

सपने में जिस-तिस तरह मिली
तुमको निर्दय आलिंगन में बांधने के लिए
आकाश में बांहें फैलाता हूं,
मेरी उस दयनीय दशा को देख
वनदेवियां बड़े-बड़े आंसू डाल बहुत रोने लगती हैं।
उनके आंसुओं के मोटे मोती
तब पेड़ों की पत्तियों पर ढुलक पड़ते हैं।

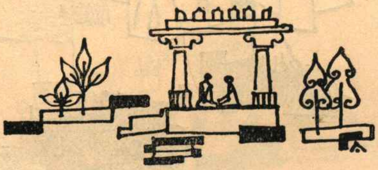

देवदारों के हाल के निकले
नरम पल्लवों को सहसा फोड़कर
उनसे निकले दूध की गंध से सिंची
जो हिमालय की हवा इस दक्खिन की ओर बह आती है,
उसे, गुणवती, मैं यह सोचकर
भरपूर अंग भेंट लेता हूं
कि वह तुम्हारे अंगों को पहले परसकर आई होगी !

तीन-तीन पहरोंवाली लंबी
पहाड़-सी रात क्षण-भर में किस तरह काट लूं,
दिन में निरन्तर सुलगनेवाली
विरहाग्नि के ताप को कैसे मंद कर लूं—
इस प्रकार की दुर्लभ कामनाएं करते रहनेवाले मुझको,
हे लोल नयनोंवाली प्रिये,
तुम्हारे विरह की वेदना ने
घने संताप से निरवलंब कर दिया है !

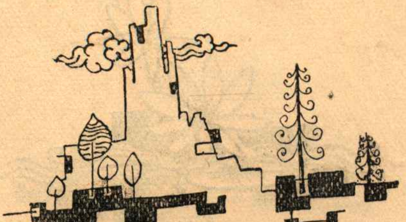

अपने सूने को अनेकानेक साध की कल्पनाओं से भर
मैं स्वयं अपने जीवन को रख रहा हूं।
इससे, हे कल्याणी,
तुम भी नितांत कातर न बनो,
अपने आप धैर्य धारण करो।
आखिर कौन सदा मात्र सुखी ही रहा है,
किसे सदा केवल दुःख ही मिला है !
आदमी की दशा तो पहिये की भांति चलती है,
कभी ऊपर कभी नीचे, कभी सुख कभी दुःख !

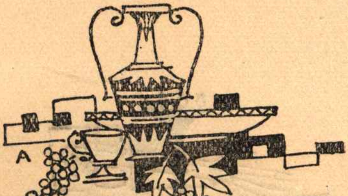

देवोठान को, जब भगवान विष्णु
अपनी शेषशय्या से उठेंगे,
तब मेरे शाप का, विरह का, अंत हो जाएगा।
इससे विरह के बाकी चार मास
और चुपचाप आंख मूंदकर काट लो।
फिर तो पीछे कातिक की चमकती चांदनी-भरी रातों में
विरह में गुनी सारी साधें
हम दोनों पूरी कर लेंगे!

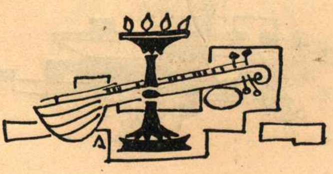

उसे कहना, तुम्हारे पति ने इतना और कहा है—
पहले की बात है,
एक बार तुम मेरे गले में बांहें डाले सो रही थीं;
और सहसा ज़ोर से रोती जग पड़ी थीं।
तब मेरे बार-बार पूछने पर
तुमने हंसते हुए कहा था—
धूर्त, मैंने स्वप्न में तुम्हें किसी और के साथ
रमण करते देखा है!

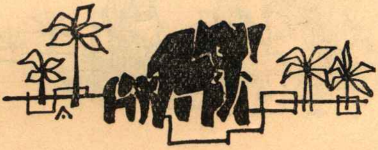

इस गोपनीय कथा की पहचान से
तुम जान लेना कि मैं सकुशल हूं,
और हे चपलनयने,
लोगों की चर्चा पर विश्वास न करना।
कहते हैं, नेह विरह में कम हो जाता है, सो गलत है।
वस्तुतः सच तो यह है कि भोग के अभाव में
इष्ट वस्तुओं और साधों के विषय में
रस के संचित होते जाने से
प्रेम की एक राशि खड़ी हो जाती है।

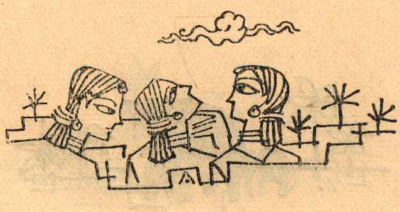

पहले विरह की कठिन व्यथा से पीड़ित
अपनी सखी को धीरज बंधाकर
तुम शिव के नंदी की क्रीड़ाभूमि
उस कैलास की चोटी से झट लौट आना,
फिर प्रिया का भी पहचानसहित
कुशल-संदेश लाकर मुझे देना,
जिससे मैं भी प्रातःकालीन कुंद की तरह
अपना शिथिल जीवन धारण कर सकूं।

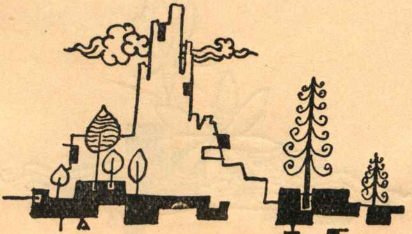

मित्र, क्या तुमने मित्र का यह कार्य करना स्वीकार कर लिया है?
निश्चय मैं उच्चरित शब्द द्वारा
दिए गए उत्तर ही से स्वीकृति नहीं मानूंगा,
क्योंकि तुम तो निरुत्तर ही
याचक चातकों को जल देते हो।
मित्रों का कार्य पूरा कर देना ही
सज्जनों का उत्तर हुआ करता है।

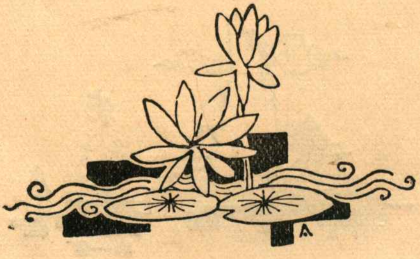

जलद, मित्रभाव से या मुझ विरही पर दया के विचार से,
मेरी यह अनुचित विनय मानकर
मेरा कार्य कर देना,
फिर पावस की संपदा से संयुक्त
जहां चाहो विचरना।
मेरी तुम्हारे लिए बस यही कामना है
कि क्षण-भर के लिए भी अपनी बिजली से,
मेरी तरह, तुम्हारा कभी वियोग न हो !

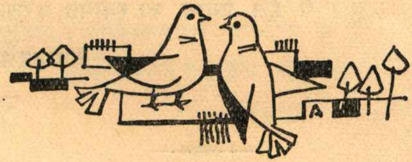

हिन्द पॉकेट बुक्स

राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के उच्च-कोटि के लेखकों की कृतियां व संसार के प्रसिद्ध कलाकारों की रचनाओं के अनुवाद सस्ते व सर्वसुलभ मूल्य पर पढ़ने के लिए हिन्द पॉकेट बुक्स खरीदिए। देश-भर की जनता और नेताओं ने इन पुस्तकों की प्रशंसा की है।

'इन्हें देखकर खुशी हुई। हिन्दी में ऐसी अच्छी और सस्ती पुस्तकें निकालकर आपने इसकी उपयोगिता और लोकप्रियता बढ़ाई है। वास्तव में यह प्रयत्न सराहनीय है।'

—डा० राजेन्द्र प्रसाद
राष्ट्रपति

'हिन्द पॉकेट बुक्स देखकर मुझे प्रसन्नता हुई है। मैं सदैव अच्छी पुस्तकों के सस्ते संस्करण प्रकाशित करने के पक्ष में रहा हूं। मैं इस प्रयास का स्वागत करता हूं।'

—जवाहरलाल नेहरू
प्रधानमन्त्री

'पुस्तकें निस्सन्देह आकर्षक हैं। मुझे
प्रसन्नता है कि आपने हिन्दी के क्षेत्र
में यह नया कार्य किया है। मैं आपकी
सफलता की कामना करता हूं।'

—**डा० श्रीमाली**
शिक्षामन्त्री, भारत सरकार

'हिन्द पॉकेट बुक्स बहुत सुन्दर हैं। एक
रुपया प्रति पुस्तक मूल्य भी कम
है। और मुझे आशा है कि इन
प्रकाशनों को जनता पसन्द करेगी।'

—**सी० डी० देशमुख**
चेयरमैन, नेशनल बुक ट्रस्ट

'आपके इस आयोजन से हिन्दी का
हित होगा और उसकी वृद्धि भी
होगी। पुस्तकमाला दर्शनीय है।
रूप-रंग देखते हुए मूल्य भी उचित है।'

—**राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त**

अब तक प्रकाशित

५८ हिन्द पॉकेट बुक्स

उपन्यास

आभा : आचार्य चतुरसेन
बीते दिन : जैनेन्द्रकुमार
बड़ी-बड़ी आंखें : उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
बर्फ़ का दर्द : उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
गद्दार : कृश्न चन्दर
एक गधे की आत्मकथा : कृश्न चन्दर
देवदास : शरत्चन्द्र
आनन्द मठ : बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय
आरती : ताराशंकर बन्द्योपाध्याय
क्रांतिकारी : जयन्त वाचस्पति
मुक्ता : सत्यकाम विद्यालंकार
संकल्प : हंसराज 'रहबर'
छोटी-सी बात : रांगेय राघव
दायरे : रांगेय राघव
अंधेरा उजाला : ख़्वाजा अहमद अब्बास
प्यार की पुकार : ख़्वाजा अहमद अब्बास
डाक्टर देव : अमृता प्रीतम
एक सवाल : अमृता प्रीतम
कुलटा : राजेन्द्र यादव
ज्वारभाटा : मन्मथनाथ गुप्त
अजगर, बाघ और देवता : सत्यपाल विद्यालंकार
भूल : गुरुदत्त

अधूरा सपना	:	अनन्त गोपाल शेवड़े
कलाकार का प्रेम	:	राजबहादुर सिंह
एक स्वप्न, एक सत्य	:	यज्ञदत्त
एक लड़की : दो रूप	:	रजनी पनिकर
छलना	:	गोर्की
प्यार की ज़िन्दगी	:	टाल्सटॉय
संघर्ष	:	चेखव
प्रेमिका	:	लिन यूताङ
पहला प्यार	:	तुर्गनेव
सागर और मनुष्य	:	अर्नेस्ट हेमिंग्वे
इंसान या शैतान	:	स्टीवेन्सन
अधिकार	:	प्रेमेन्द्र मित्र

कहानी

पतिता	:	आचार्य चतुरसेन
रहस्य की कहानियां	:	एडगर ऐलन पो
बंगला की सर्वश्रेष्ठ कहानियां	:	राधेश्याम पुरोहित
उर्दू की सर्वश्रेष्ठ कहानियां	:	प्रकाश पंडित
संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियां	:	बालकृष्ण एम० ए०

काव्य : शायरी

मेघदूत	:	कालिदास
गीतांजलि	:	रवीन्द्रनाथ ठाकुर
जिगर की शायरी	:	जिगर
दीवान-ए-ग़ालिब	:	ग़ालिब
उमर खैयाम की रुबाइयां	:	'बच्चन'
गाता जाए बंजारा	:	साहिर लुधियानवी
आज की उर्दू शायरी	:	प्रकाश पंडित

जीवनोपयोगी

सफल कैसे हों : स्वेट मार्डेन
जैसा चाहो वैसा बनो : स्वेट मार्डेन
सफलता के आठ साधन : जेम्स ऐलन

विविध

घूंघट में गोरी जले : कृश्न चन्दर
गांधीजी की सूक्तियां : ठा॰ राजबहादुर सिंह
पत्र लिखने की कला : प्रो॰ विराज एम॰ ए॰
बर्थ कंट्रोल : डा॰ लक्ष्मीनारायण शर्मा
योगासन और स्वास्थ्य : डा॰ लक्ष्मीनारायण शर्मा
ठीक खाओ, स्वस्थ रहो : शुकदेवप्रसाद सिंह
आपका शरीर : आनन्द कुमार
हस्त-रेखाएं : प्रकाश दीक्षित
अमर वाणी : 'मानसहंस'

प्रत्येक का मूल्य एक रुपया

यदि आप चाहते हैं कि नित-नई प्रकाशित होने वाली हिन्द पॉकेट बुक्स की सूचना आपको मिलती रहे तो अपना पता हमें लिख भेजें। हम आपको इस विषय में नियमित जानकारी भेजते रहेंगे।

हिन्द पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटिड

जी॰ टी॰ रोड, शाहदरा, दिल्ली–३२

हिन्द
पॉकेट
बुक्स
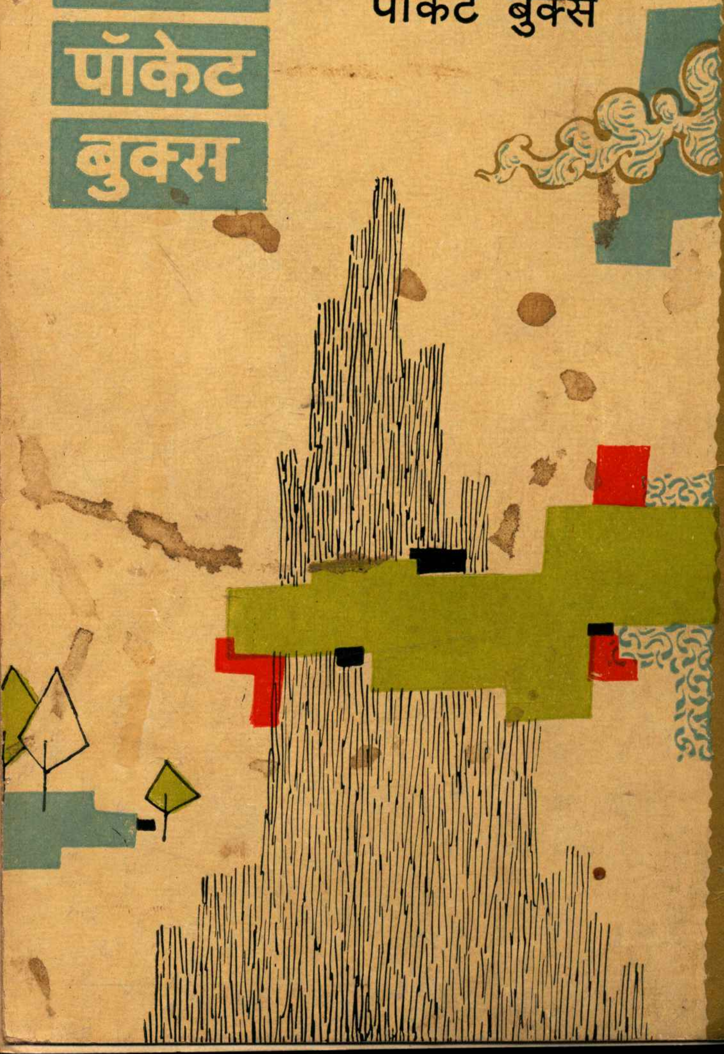
भारत की सर्वप्रथम
पॉकेट बुक्स